सीखने का खेल और खेल-खेल में सीखना

मुकेश मालवीय

बतौर शिक्षक मैंने इस विचार की ख़ूब वकालत सुनी है कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों का सीखना-सिखाना, खेल-खेल में होना चाहिए। पर अधिकांश विचारों में यह जिरह बहुत संकीर्ण रही है कि खेल से या खेल-खेल में सिखाना क्यों और कैसे किया जाए। इस लेख में खेल से सीखने के जुमले को स्कूलों ने किस रूप में स्वीकृत और विकृत रूप में प्रचलित किया है, उसको लिखने की बजाय मैं यह लिखने की कोशिश करूँगा कि इस सन्दर्भ में मैंने क्या समझा और इसे कैसे अपनाया। मेरे अनुभव शासकीय प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक के रूप में उस समझ से बने हैं जो मुझमें *एकलव्य* के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) के हिस्सा बनने से प्रस्फुटित हुई थी।

शुरुआती कक्षाओं में खेल के माध्यम से सीखना क्यों?

प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने की स्थिति सवालों के घेरे में है। स्कूल आने के पहले अपने पूरे संसार के साथ हस्तक्षेप कर उसे समझने और उसके साथ चलने वाले बच्चे स्कूल में आकर शुरुआत में ही, न सीखने वाले या पिछड़ जाने वाले बन जाते हैं। स्कूल में सिखाने का तरीक़ा, बच्चों की अभी तक की सीखने-समझने की प्रक्रिया से बहुत अलग हो जाता है। इस प्रक्रिया में उन्हें सम्बोधित तो किया जाता है पर शामिल नहीं किया जाता या अपर्याप्त रूप से किया जाता है।

> प्रारम्भिक कक्षाओं में बच्चे समझने, पढ़ने, लिखने, अवलोकन करने, अपने विचार व्यक्त करने, गणना करने इत्यादि के कौशल सीखते हैं, उनका विस्तार करते हैं। कौशलों को सीखना, भागीदार बनकर ही सम्भव है। केवल शिक्षक के बताने, समझाने से इन्हें हासिल करना बच्चों के लिए प्रायः अर्थहीन, दुष्कर और कष्टप्रद कार्य बन जाता है। शिक्षक की बताई हुई बातों को दोहराने भर से शिक्षण तो अवश्य होता है लेकिन सीखना कम ही हो पाता है।

मेरी समझ से इन कौशलों को तब ही बेहतर सीखा जा सकता है जब सीखने वाले के पास ख़ुद की समझ को इस्तेमाल करने के अवसर हों। साथ ही सीखने का अवसर एक ऐसी चुनौती के रूप में पेश हो कि जिसे स्वीकार करना उनके लिए एक अनिवार्यता बन जाए अर्थात यह प्रक्रिया ऐसी हो कि उन्हें लुभा सके। इसमें भागीदारी करके उन्हें कुछ हासिल होने या छूट जाने का अहसास हो।

स्कूल में सीखने का ऐसा माहौल बनाया जाना चाहिए, जिसमें बच्चे अपनी स्वाभाविक क्षमता का इस्तेमाल कर (सीखने की) चुनौती को स्वीकार करें और उसमें भागीदारी करते हुए अपनी व्यक्तिगत समझ का प्रदर्शन कर सकें और इस पूरी प्रक्रिया का आनन्द ले सकें। इस तरह की प्रक्रिया को ही हम सीखने का खेल, गतिविधि या क्रियाकलाप आदि कह रहे हैं।

खेल के माध्यम से सीखने का अर्थ

खेल के माध्यम से सीखना क्या होता है? इसके क्या गुण हैं, इससे क्या सीखा जाता है? खेल गतिविधि में खेल के सारे तत्व हो सकते हैं, पर इनमें खेल से अलग एक उद्देश्य छिपा होता है इसे हम शैक्षिक या 'स्कूली उद्देश्य' कह सकते हैं। खेल और गतिविधियाँ दो तरह की हो सकती हैं :

1. पहली, जिसमें शारीरिक गतिशीलता के साथ-साथ मानसिक गतिशीलता भी होती है, यानी ख़ुद के सोच-विचार का उपयोग करना होता है।
2. दूसरी, जिसमें शारीरिक गतिशीलता कम होती है या नहीं होती, केवल मानसिक गतिशीलता होती है।

दोनों ही गतिविधियों में समूह में भागीदारी करने या एकल भागीदारी की ज़रूरत होती है। प्रत्येक बच्चा भागीदारी करे, यह इन गतिविधियों का प्रमुख तत्व है। भागीदारी का मतलब है चल रही प्रक्रिया या संवाद में शामिल होने के लिए बच्चों को बराबरी के मौक़े मिलें और ऐसा अनिवार्य रूप से हो।

गतिविधि 1

एक कक्षा में बच्चे गोल घेरे में बैठे हैं। वे एक गतिविधि कर रहे हैं, जिसमें हर एक बच्चे को एक लम्बी और एक गोल वस्तु का नाम बताना है। इसे एक गीत और गेंद के ज़रिए खेला जा रहा है। बच्चे गा रहे हैं, 'क्या है लम्बा क्या है गोल, जल्दी बोल जल्दी बोल'। किसी एक बच्चे के पास गेंद फेंकी जाती है और यह लाइन दोहराई जाती है। जिसके पास गेंद आई है उसे एक लम्बी और एक गोल वस्तु का नाम बताना है। नियम यह भी है कि पहले बता दी गई वस्तुओं के नाम नहीं दोहरा सकते। गेंद किसी के पास भी जा सकती है इसलिए सबने

पहले से ही वस्तुओं के नाम सोच रखे हैं। परन्तु उन्हें बार-बार नया सोचना पड़ रहा है क्योंकि उनके सोचे हुए नाम दूसरों ने बोल दिए हैं।

इस गतिविधि की विवेचना करने पर जान सकते हैं कि इसमें शामिल प्रत्येक बच्चा उस समय सोचने की प्रक्रिया में है। वह अपनी स्मृति में मौजूद उन वस्तुओं को एक निश्चित गुण के आधार पर टटोल रहा है जिसमें लम्बे या गोल होने की पहचान छुपी हुई है। यह पहचान बिल्कुल स्पष्ट परिभाषा के रूप में मौजूद नहीं है। पर उसके पास 'लम्बेपन' और 'गोलपन के विचार के रूप में है। इसमें बच्चे अपने द्वारा बताई हुई वस्तु के लिए कई बार तर्क भी गढ़ते हैं। जैसे एक बच्चे ने गोल वस्तु के लिए 'गमला' कहा। जब अन्य बच्चों ने कहा कि यह तो लम्बा भी है तो उसने कहा कि गमले में ऊपर और नीचे तो गोल भाग है। फिर शिक्षक इस गतिविधि में बताई गई लम्बी और गोल वस्तुओं की सूची बोर्ड पर लिख देते हैं। फिर सूची को देखते हुए लम्बे और गोल की पहचान का क्या आधार है, इस पर बच्चों से बातचीत करते हैं।

प्रायः खेल गतिविधि एक से अधिक कौशल को समाहित किए होती है। मगर शिक्षक को किसी गतिविधि विशेष को कराने के पीछे एक निश्चित कौशल को ध्यान में रखना चाहिए। उपरोक्त गतिविधि में लम्बी और गोल वस्तु की पहचान कराना उद्देश्य नहीं है, क्योंकि पहचान तो बच्चों के पास पहले से है ही। यहाँ उद्देश्य यह है कि बच्चे एक निश्चित गुण या पहचान के आधार पर वस्तुओं को वर्गीकृत या समूहीकरण करने की तरफ अग्रसर हों।

गतिविधि 2

एक कक्षा में जहाँ बच्चे अभी पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं, शिक्षक ने हरेक बच्चे को स्कूल के बाहर जाकर आसपास से कोई दो वस्तुएँ लाने को कहा। थोड़ी देर में बच्चे कुछ वस्तुएँ लेकर आ गए। शिक्षक ने बोर्ड पर एक तालिका बनाई, जिसमें तीन स्तम्भ थे : वस्तु का नाम, रंग और वह कहाँ मिली।

अब उन्होंने बच्चों से कहा कि आप जो वस्तु लेकर आए हैं, उसका नाम और उसका रंग बताना है। और यह भी बताना कि वह कहाँ मिली। बच्चे अपनी-अपनी वस्तु के बारे में बताते गए। शिक्षक बोर्ड पर उन्हें तालिका में लिखते गए। लिखते समय वे यह जतला रहे थे कि वे नाम कहाँ लिख रहे हैं, रंग कहाँ और मिलने की जगह कहाँ लिख रहे हैं। इस तरह जब तालिका बन गई तब सभी बच्चों की वस्तुओं को एक जगह इकट्ठा कर दिया गया। अब शिक्षक ने इस तालिका पर ख़ुद ऊँगली रखकर पढ़कर बताया। फिर बच्चों से कहा कि वे बोर्ड पर आकर बताएँ कि उनकी वस्तु का नाम कहाँ लिखा है। उन्हें उस वस्तु का रंग और वह कहाँ मिली यह भी लिखा दिखाना है। फिर उन्होंने दो-दो बच्चों की जोड़ी बना दी। अब इस जोड़ी को एक-दूसरे की वस्तु की लाईन पहचान कर पढ़ना था। यह होने के बाद शिक्षक ने कहा कि मैं किसी वस्तु के मिलने वाली जगह का नाम पढ़कर बताऊँगा, आपको बताना है वह कौन-सी वस्तु है। कहाँ लिखी है।

वस्तुतः इस गतिविधि में शिक्षक लिखित शब्दों को पहचान कर पढ़ना सिखा रहे थे। पर जानकारी को तालिका में लिखना और तालिका को समझना भी सह-उद्देश्य के रूप में साथ रखा है।

इन दोनों गतिविधियों को हम परखें, तो खेल-गतिविधियों के बारे में यह बिन्दु निकल कर आते हैं :

- गतिविधि में इस्तेमाल अवधारणा/ क्षमता का थोड़ा अंश बच्चों में पहले से मौजूद होता है।
- गतिविधि के दौरान प्रत्येक बच्चे के सामने ख़ुद की सोच और समझ का अनुप्रयोग करने की चुनौती होती है।
- इस भागीदारी के दौरान साथियों की प्रतिक्रिया या फीडबैक सीधे मिलता है जिससे उस अवधारणा की समझ में स्पष्टता आती है।
- इस प्रक्रिया में उत्साह पैदा होता है जो कि इस तरह की चुनौतियों को सहज स्वीकारने का हौसला देता है।

खेल गतिविधियों को शिक्षकों के लिए प्रासंगिक बनाना

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को समझना

बच्चे बहुत कुछ घर-परिवेश में सीखते हैं, जैसे - घर के काम करना, खेलना, नए व्यक्ति के सामने या नई जगह पर अच्छा व्यवहार करना आदि। इन उदाहरणों का विश्लेषण करने से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया के कुछ बुनियादी तथ्य समझ में आते हैं। हम ख़ुद के सीखे हुए किसी हुनर के उदाहरण को लेकर भी सीखने की प्रक्रिया को समझ सकते हैं। जैसे मुझे अपनी माँ को रोटी बनाते देख बहुत मन करता था कि मैं भी रोटी बनाऊँ। मैंने ज़िद की तो माँ ने आख़िरी की दो रोटी बनाने का काम मुझे दे दिया। हर रोज़ मैं आख़िरी रोटी के इन्तज़ार में माँ के द्वारा रोटी गोल बेलने की प्रक्रिया को ध्यान से देखता। पर जब मैं रोटी बेलने की कोशिश करता तो वह बेलन के दबाव से चिपक जाती। गोल बनती ही नहीं। बीच में मोटी हो जाती। पर मैंने हार नहीं मानी। माँ के बताने और ख़ुद करने से एक-दो सप्ताह में गोल रोटी बनाना आ गया। मैं रोटी बनाना सीखने को विश्लेषित करूँ तो पाता हूँ कि सीखने में - देखकर ख़ुद समझना, अपनी समझ का इस्तेमाल करना, उस प्रक्रिया को दोहराना, ज़िम्मेदार होना, ख़ुद से शामिल होना, नए तरीक़े सोचना और गढ़ना, चुनौती स्वीकार करना, सीखने में उत्साह

दिखाना, व्यग्रता दिखाना, साहस करना, आनन्द लेना, पुनः प्रयास करना इत्यादि शामिल हैं। इससे मुझे बच्चों के स्कूली शिक्षण में सिखाने के तरीक़ों में खेल गतिविधियों को पिरोने का आधार मिलता है।

विषय की बुनियादी समझ का होना

मैं खेल-गतिविधियों की मदद से बच्चों के साथ सीखना-सिखाना इसलिए कर पाया, क्योंकि मुझे यह समझ में आया कि जो विषय बच्चों को सिखाया-पढ़ाया जा रहा है वह किन क्षमताओं का विकास उनमें करेगा। भाषा, पर्यावरण अध्ययन,विज्ञान या गणित एक जैसे तरीक़ों से सिखाए-पढ़ाए नहीं जा सकते हैं। मेरी यह समझ बनी कि भाषा (विषय) बच्चों को अपने मौलिक विचार बोलकर या लिखकर अभिव्यक्त करने की क्षमता देने के लिए है। तब मेरे सिखाने में ऐसे मौक़े या अवसर बने, जिसमें बच्चे किसी मुद्दे पर नए और ख़ुद के अनुभव व्यक्त कर रहे थे।

मैंने इस तरह की गतिविधियाँ बनाईं जिनमें बच्चे किसी विषय से जुड़े शब्द बताते। मुझे पर्यावरण विषय के अन्तर्गत रुककर सोचना था कि पानी के स्रोत क्या-क्या हैं, सिर्फ़ यह बताना सही है या गाँव में कितने हैंडपम्प और कुएँ हैं और कहाँ-कहाँ हैं यह पता करने उन्हें गाँव में ही भेजना। गणित में मुझे यह पता था कि गिनने की क्षमता हासिल करने का तात्पर्य किसी समूह में वस्तु की मात्रा पता करना है। इसके लिए मैंने ऐसी गतिविधियाँ बनाईं जिनमें बच्चों को गिनने की आवश्यकता पड़ती थी।

विषय की समझ एक व्यापक विमर्श की माँग करने वाला बिन्दु है। शिक्षा से जुड़े अधिकारी और शिक्षाविद, बच्चों को खेल-खेल में सिखाने के विचार से सहमत तो होते हैं, पर वे विषयों को इतने संकुचित दायरे में देखने और समझने के आदी होते हैं कि विषय की शुद्धता पर बल देते हैं या दूसरे शब्दों में कहें तो उसे व्याकरण या नियमसम्मत क़िताब की तरह देखते हैं। विचार का यह संक्रमण शिक्षकों में भी व्याप्त है। शुरुआती स्कूली शिक्षा में विषय की दीवार को कमज़ोर करना ज़रूरी है, तभी सीखने में खेल गतिविधियों को जगह मिलेगी।

शिक्षक का ख़ुद खेल गतिविधियों में शामिल होना और उनका निर्माण करना

शिक्षक खेल गतिविधियों में ख़ुद शामिल नहीं रहे हों, तो खेल के माध्यम से सीखने के प्रति उनका विश्वास हमेशा कमज़ोर रहता है। *प्राशिका* में हमने शिक्षक प्रशिक्षणों के दौरान बहुत से खेल बनाए और खेले। उनमें से कुछ से आपका परिचय कराता हूँ।

सभी शिक्षक एक बड़े गोल घेरे में बैठकर किसी शब्द विशेष पर अपने वाक्य कह रहे हैं। हर शिक्षक को अपना नया वाक्य कहना है जैसे 'कुर्सी' शब्द पर शुरुआती वाक्य तो उपयोग सम्बन्धी ही थे जैसे 'कुर्सी बैठने के काम आती है', 'कुर्सी लकड़ी या लोहे या प्लास्टिक की बनी होती है', कुर्सी के चार पैर होते हैं'। लेकिन जैसे-जैसे गतिविधि आगे बढ़ी वैसे-वैसे अनुभव और कल्पना पर आधारित वाक्य आने लगे। जब हमारे सामने 'कुर्सी' शब्द को बिल्कुल नए तरीक़े से इस्तेमाल करने की चुनौती पेश आई तब हम नए, मौलिक वाक्य बनाने की ओर अग्रसर हुए। हमारे भीतर एक नई भाषा जन्म ले रही थी।

इसी गतिविधि का अगला चरण था दो अलग-अलग शब्दों का उपयोग कर अपना वाक्य कहना। जैसे 'कुर्सी' और 'आसमान'। अब सभी को अपनी बारी आने पर ऐसे वाक्य बनाने थे जिसमें कुर्सी और आसमान का आपस में सम्बन्ध हो- 'मैं आसमान जितनी ऊँची कुर्सी पर बैठूँगा', 'ईश्वर आसमान की कुर्सी पर बैठे हैं', 'आसमान उड़ने के लिए है वहाँ कुर्सी की क्या ज़रूरत'। इस खेल-गतिविधि में हमने भाषा के रचनात्मक इस्तेमाल का सहज ही प्रयोग किया। नए वाक्य की सराहना और रचनात्मक प्रयोग से यह खेल आनन्ददायक और मज़ेदार बन गया।

एक दूसरी गतिविधि गणित के लिए थी - 'संख्या बूझो'। इसमें शिक्षकों के दो समूह बनाए गए। एक समूह 1 से 100 के बीच की कोई एक संख्या चुनता है। दूसरे समूह को इस संख्या का पता केवल प्रश्न पूछकर लगाना होता और प्रश्न इस तरह के होते कि उनके जवाब हाँ या नहीं में दिए जा सकते हों। जैसे क्या वह संख्या 50 से बड़ी है? क्या उसका दहाई का अंक 2 से बड़ा है? इस तरह कम-से-कम प्रश्नों में सही संख्या को ढूँढना होता।

एक-दो बार खेल लेने के बाद हमें समझ आया कि प्रश्न किस तरह बनाने हैं। एक शिक्षिका ने सुझाया कि पहला प्रश्न यह है सकता है कि क्या संख्या 50 से छोटी है? अब इसका उत्तर यदि नहीं है तो हम 1 से 49 तक की संख्या छोड़ देंगे। यह सचमुच अच्छा प्रश्न था जो बाद में अधिकतर बार पहले प्रश्न के रूप में दोहराया गया। अब अगले प्रश्न इस तरह बनाने की कोशिश करते कि खोजने वाली संख्या का दायरा छोटा होता जाए। नए प्रश्न सोचने में हम किसी संख्या को उसकी तमाम पहचान जैसे इकाई, दहाई, बड़ी, छोटी, विभाज्यता आदि मे बाँध रहे थे।

हमने इन गतिवधियों से सीखने के आनन्द को महसूस किया। इसमें शामिल होकर हमारे अन्दर की झिझक खत्म हुई थी। हमने इन गतिविधियों से नए हुनर जैसे कविता, कहानी बनाना, अभिनय करना, नई तरह से अपनी बात कहना, प्रयोग करना, सर्वे करना, संख्या को नए अर्थ में समझना आदि सीखे थे।

इन सीखे हुए खेल और इन अनुभवों का इस्तेमाल हमने अपने स्कूल के बच्चों के साथ इसलिए भी किया, क्योंकि इसमें हमें भी आनन्द और सिखाने की उपलब्धि का अहसास मिलता था।

पाठयपुस्तकों में खेल-गतिविधियाँ

शुरूआती कक्षाओं में सिखाने के लिए सबसे बेहतर तो यह होगा कि पाठ्यपुस्तकें ऐसी हों जिनमें हर पाठ के लिए गतिविधियाँ हों। लेकिन यदि ऐसा नहीं है तो शिक्षकों को बहुत सारी गतिविधियों से परिचित कराया जाना चाहिए। एक प्राथमिक शिक्षक होने के नाते हमारे पास सीखने-सिखाने से सम्बन्धित बहुत सारी खेल गतिविधियाँ होनी चाहिए। हमने *प्राशिका* के दौरान जो खेल/गतिविधियाँ सीखीं, निर्मित कीं और बच्चों के साथ अपनाई थीं उनमें से कुछ का ज़िक्र कर रहा हूँ :

1. कहानी आगे बढ़ाना, दिए गए शब्दों से कहानी बनाना, कहानी में पात्र बदलना।
2. कविता या गीत आगे बढ़ाना : '*हम तो सो रहे थे हमें मुर्गे ने जगाया बोला...*', '*हम तो सो रहे थे हमें बिल्ली ने जगाया बोली...*'। हर बार इस पंक्ति में पिछली सारी वस्तुओं के साथ अपनी वस्तु जोड़ना।
3. कानाफूसी
4. आँख पर पट्टी बाँधकर चित्र बनाना
5. किसी दी गई आकृति, जैसे आधा गोला, आड़ी लाइन और तिकोने से चित्र बनाना।
6. गीली मिट्टी से वस्तुएँ बनाना।
7. आलू, भिण्डी आदि के कटे टुकड़ों से ठप्पे बनाना।
8. सरल प्रयोग करना, जैसे भरे गिलास में सिक्के डालना, घुलनशीलता देखना, लुढ़काना।
9. एक जैसे, अलग-अलग
10. नक्शे पर चलना

मेरा मानना है कि इन्हें क्रियान्वित करने में शिक्षक तभी सहज होंगे जब वे खुले मन से यह सीखने के लिए तैयार हों कि 'बच्चे कैसे सीखते हैं', जब वे बच्चों को विवेकशील मानते हों और जब विषय की व्यवहारवादी समझ के साथ-साथ उन्होंने विषय को ख़ुद के लिए नए अर्थों में समझा हो, जो रूढ़ियों से मुक्त हो।

मुकेश मालवीय वर्तमान में होशंगाबाद, मध्यप्रदेश में वंचित बच्चों के लिए संचालित शासकीय आवासीय विद्यालय *ज्ञानोदय* में अध्यापन कर रहे हैं। वे बच्चों के साथ हुए अपने अनुभवों के बारे में शैक्षिक पत्रिकाओं में लिखते रहे हैं। *'ए टीचर जर्नी'* नामक फ़िल्म उनके द्वारा अपनाई गई सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं पर आधारित है। वे बच्चों के लिए कविताएँ और कहानियाँ भी लिखते हैं। उनसे mukeshmalviya15@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।